

सन्मति साहित्य रत्नमाला, रत्न ४

जैन कन्या शिक्षा

तीसरा भाग

[तीसरी कक्षा के लिए]

सम्पादक—

कविरत्न उपाध्याय श्री अमरचन्द्रजी
महाराज

सन्मति ज्ञान पीठ

आगरा

१९५१

प्रकाशक—
सम्मति ज्ञान पीठ
आगरा

द्वितीय संस्करण
२१००

मृत्युष्ट आगा

मा
१९५१

मुद्रक—

श्रमर भागन (ग्लेस्ट्रिक) प्रिंटिंग प्रेस,
परमारा बाजार आगरा ।

शिक्षा मानव जीवन की उन्नति का सबसे बड़ा साधन है। किसी भी देश, जाति और धर्म का अभ्युत्थ, उसकी अपनी ऊँची शिक्षा पर ही है। हर्ष है कि जैन समाज भी अब इस ओर लक्ष्य देने लगा है और हर जगह शिक्षण सस्थाओं का आयोजन हो रहा है।

लड़का की शिक्षा के साथ साथ लड़कियों की शिक्षा की ओर भी समाज ने ध्यान दिया है। और इस क्षेत्र में भी काफी सरया में कन्या पाठशालाएँ चलाई जा रही हैं। परन्तु लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक-शिक्षा का जैसा चाहिए वैसा प्रबंध नहीं हो पाया है। जहाँ वहाँ प्रबंध किया भी गया है, वहाँ धार्मिक शिक्षा का अभ्यासक्रम अच्छा न होने से वह फल नहीं पाया है।

हमारी बहुत दिनों से इच्छा थी कि यह कार्य किसी अच्छे विद्वान के हाथ सम्पन्न हो। हमें लिखते हुए हर्ष होता है कि ग्वाध्याय फकिरतन श्री अमरचन्द्र जी महाराज के द्वारा यह कार्य प्रारम्भ किया गया है। कन्याओं की मनोवृत्ति को ध्यान में रखकर ही उनकी योग्यतानुसार यह जैन कन्या शिक्षा का पाठ्यक्रम आपके सामने है। आप देखेंगे कि किस सुन्दर पद्धति व धार्मिक, सैद्धांतिक, नैतिक और ऐतिहासिक विषयों का उचित संकलन किया गया है। आशा है यह पाठ्यक्रम कन्याओं के लिए धार्मिक शिक्षा की पूर्ति करेगा।

—स्तनलाल जैन मिश्र
 मंत्री, समिति ज्ञानपीठ
 लोहामण्डी, आगरा ।



जय सन्मति, जय जिन वीर हितकर,
जय करुणा सागर, जय अमयकर !

विनय

१

मच बोले सय बात निचारे,
खर नाम कर जन्म सँचारे ।
रखे दण जाति का मान,
एमी मति होय भगरान ।

२

बारे भगइो को बिसरारे,
आगे के हित नह चदारे ।
एका करे बरे सन्मान,
एमी मति होय भगरान

भारत नामी सब मिल जावें,

गिरं हुआ को तुस्त उठाव ।

भूले कभी न अपनी थान,

ऐसी मति होवे भगवान ।

मन से वर विरोध निकालें,

सब जन-हितकर रीति निकालें ।

सदा का हो हरदम ध्यान,

ऐसी मति होवे भगवान ।

जैन धर्म की जय नित गावें,

सदाचार पर बलि बलि जावें ।

भारत मा की हम सन्तान,

ऐसी मति होवे भगवान ।

जीव और अजीव

‘सरला, तुम्हारी माता जैन धर्म का पालन करती हैं न !’

‘जी हा ! माता जी का जैन धर्म पर दृढ़ विश्वास है, और वे हमेशा जैन धर्म का पालन करती हैं ?’

‘जब कभी तुम माता जी के पास बैठनी हो और वे तुम्हें हित की बात बताती हैं, तब जैन धर्म की किस शिक्षा पर अधिक जोर देती हैं ?’

‘माता जी बहुत अधिक दयालु हैं । मैं जब भी उन के पास बैठती हूँ तो हमेशा मुझे यही शिक्षा देती है कि मुन्नी, किसी भी जीव को मत मराना । सभी जीवों को हमारे समान ही दुःख सुख होता है । जब हमें दुःख पसन्द नहीं तो दूसरे जीवों को दुःख कैसे पसन्द आयगा ?’

‘तुम्हारी माता जी तो बहुत ही दयालु और कोमल स्वभाव की हैं । तुम्हारा बहुत ही बड़ा अन्धला भाग्य था,

जो तुम्हें ऐसी दयालु और नेक माता मिली। पर हा, यह तो बताओ कि जीव किसे कहते हैं? जब तक तुम जीव को अच्छी तरह न समझोगी, तब तक उसकी दया भी कैसे पालोगी ?'

'जीव किसे कहते हैं ?' यह तो मुझे पता नहीं, आप ही बताएँ ?'

'बेटी, तुम बड़ी सपानी हो। आज तुम्हें जीव किसे कहते हैं ? और जीव से विपरीत अजीव किसे कहते हैं ? यह अच्छी तरह समझाऊँगी। परन्तु पहले जरा अपनी दायात, और कलम को तो आगज दो कि वे यहां आएँ, कुछ थोड़ा सा लिखना है।'

'आप क्या बात कहती हैं ? दायात और कलम के कान थोड़े ही हैं, जो मेरी आवाज सुन लें और चली आएँ। बिना पैरों के आ भी कैसे सकती हैं ?'

'अच्छा, दायात और कलम बिना कान के हैं, इस लिए सुन नहीं सकतीं। और बिना पैर के हैं, इस लिए चल भी नहीं सकतीं। इसी तरह आख के बिना देख

नहीं सकती, और नाक के बिना सूँघ भी नहीं सकती न ?

‘जी हा, देख भी नहीं सकती और सूँघ भी नहीं सकती । दावात और क्लम के अन्वय तथा नाक कहा है ?

‘बेटी, तुम बड़ी चतुर लडकी हो । जितनी अच्छी दलील करती हो । प्रच्छा तुम्हारी दावात और क्लम बिना कान के आवाज नहीं सुन सकती, बिना आँख के देख भी नहीं सकती, बिना नाक के सूँघ नहीं सकती, और बिना पैर के चला फिर भी नहीं सकती, तो रहने दीजिए । परन्तु डेग्वो, वह सामने आले में रूढ़ का बना हुआ ललुगा गड़ा है, उसे ही आवाज दो, वह दावात और क्लम दे जायगा ?’

‘आज आप भी बँसी घातें कर रही हैं । वह तो खिलौना है, भला कैसे सुन सकता है, और आ सकता है ?’

‘बेटी मरला, अब तुम मुझे घोरमा नहीं दे सकती । खिलौना हुआ तो क्या है ? जब इस के कान मौजूद है, तब सुन क्या नहीं सकता ? क्या बहरा हो गया है जब पैर मौजूद है तो, तब चल फिर क्यों नहीं सकता ? क्या पैरों में दर्द है ?’

‘यनी, जान है तो क्या हुआ ? बनावटी कानों से सुना थोड़े ही जाता है ? पर भी बनावटी है इस लिए इन से चला किंग भी नहीं जा सकता । नहरे पन की थार दर् की घात नहीं है ।’

‘बेटी, यह लो बर्फी । ललुया को खिला दो, उसे भून लग रही होगी । विचाग कन से चुप चाप सडा है ?’

‘यह खा भी नहीं सकता ।’

‘मुँह तो है फिर खा क्यों नहीं सकता ?’

‘यह मुँह असली मुँह थोड़े ही है ? बनावटी है । बनावटी मुँह से न खाया जाता है न पोला जाता है ।’

‘तुम्हारे कहने के अनुमार तो फिर यह सूँघ भी नहीं सकता । नारु भी तो बनावटी ही है ?’

‘जी हाँ । नाक बनावटी है, इस लिए यह फल बगैरह सूँघ भी नहीं सकता ।’

‘मेरी प्यारी निटिया, तुम तो अब बहुत हुँसियार होगई हो । कितनी सुन्दर घातें कर रही हो । तुम्हारी घात

मैंने मान ली । घनावटी कान से सुना नहीं जा सकता ।
 घनावटी श्राँख से देखा नहीं जा सकता । घनावटी नाक मे
 सूँघा नहीं जा सकता । घनावटी मुँह से खाया नहीं जा
 सकता । क्यों ठीक है न ?'

‘जी हाँ बिल्कुल ठीक है ।’

‘अच्छा यह बताओ—तुमने कभी कोई मरा हुआ
 बिल्ली का बच्चा, या मरा हुआ कुत्ते का पिल्ला,
 देखा है ।’

‘हाँ, देखा है ।’

‘वह तो सुन सकता होगा, देख सकता होगा ?
 चल फिर सकता होगा, श्राँख खा पी सकता होगा ?’

‘मला कहीं मुर्दा भी ऐसा कर सकता है ? मुर्दा न
 सुन सकता है, न देख सकता है, न चल फिर सकता है,
 श्राँख न खा पी सकता है ।’

‘क्यों नहीं कर सकता ? उसके तो श्राँख, कान,
 मग्न आदि असली हैं, घनावटी नहीं हैं ।’

‘आँख, कान आदि असली हैं, घनावटी नहीं हैं, आपकी यह बात ठीक है। परन्तु जो मुर्दा हो जाता है, उसमें जान नहीं रहती, इस लिए वह आँख कान आदि के होते हुए भी उन से काम नहीं ले सकता। बेजान चीज, जानदारा की तरह, काम नहीं कर सकती।’

‘सरला, अब जो चार तूने पते की बात कही है। बेजान चीज जानदारों की तरह हरकत नहीं कर सकती, यह बात बिल्कुल सही है। बेटी, तन तो रगड़ का ललुआ भी, बेजान होने से हीदेखना सुाना आदि नहीं कर सकता, घनावटी और असली आँख कान आदि का तो अब कोई प्रश्न नहीं रहा। और यही बात तुम्हारी दायात और कलम की वाक्य में भी है। वे भी बेजान हैं, इस लिए देख, सुन, चल फिर नहीं सकतीं।’

‘जी हाँ आपका कहना बिल्कुल सही है। दायात, कलम, रगड़ का ललुआ, मरा हुआ गिल्ली का चचा आदि सब बेजान हैं, इस लिए देखना, सुनना आदि काम नहीं कर सकते।’

‘बेटी, श्वशुर तुम अपने आप ही समझ गई हो। देखो, निम्मे जान है, जो जानदार है, वे जीव कहलाते हैं। इसके विपरीत निम्मे जान नहीं है, जो जानदार नहीं है वे अजीव कहलाते हैं। जो ही अपनी इच्छा में चल फिर सकता है, खा पी सकता है, देख सकता है, सुन सकता है, रोना, हँसना, गर्मी, सर्दी जानना आदि जीव ही कर सकता है, अजीव नहीं कर सकता। जिसे सुख दुख का ज्ञान है, जो अपने भरोसे को जानता है, वह जीव है, यानी सज जीव है। इसी लिए तुम्हारी माता जी कहती हैं कि किसी जीव को मत चनाओ, क्योंकि उसको दुख पहुँचेगा।’

‘आज आपको मुझ पर बड़ी दया की। जीव और अजीव का भेद, अब मैं अच्छी तरह समझ गई हूँ।’

‘बेटी सरला, मुझे बड़ी खुशी है, कि तुम जीव और अजीव के इस कठिन विषय को इतनी जल्दी समझ गई हो। अब याद रखना। देखना, ऊर्ध्व मूल न जाना। क्या ? (१) निम्मे में जान हो, जानने और समझने की ताकत हो, तब ही सुख दुख का अनुभव होता है, उन्हें जीव कहते

हैं। जैसे आदमी, घोड़ा, गाय, मिल्ली क्यूतर, आदि।
 (२) तिनमें न जान हो, न जानने और समझने की ताकत हो, जिन्हें सुख दुःख का अनुभव न होता हो, उन्हें अजीव कहते हैं। जैसे—दावात, कलम, मेज, कुर्सी, आदि।

[ब्रह्म, जल, अग्नि, वायु, मिट्टी में जीव हैं यह आगे चलकर बर्णन किया जायगा]

प्रभ्यास

- १ जीव किसे कहते ?
- २ अजीव किसे कहते हैं ?
- ३ गधा, घोड़ा क्यूतर जीव हैं या अजीव ?
- ४ कुर्सी, मेज, स्लेट न हैं या अजीव ?
- ५ नीचे लिखे पदों में से जीव और अजीव को अलग अलग बनाओ —
 कुत्ता, हिरन, टैंक, गा, चौकी, पुरतक, मनुष्य, तोता,
 घड़ी, गाय, मोटर, मगर, सुर्गी, कलम, दावात, बिन्नी,
 हाथी आदि।

प्रभात गायन

१

उठ जाग मुसाफिर भोर भइ,
श्रव रैन कहा जो सोवत है ।
जो जागत है सो पावत है,
जो सोवत है सो खोवत है ।

२

डुक नाद से श्रखियों गोल जरा,
श्ररु श्रपने प्रभु से ध्यान लगा ।
बह प्रीति करा की रीति नहीं,
प्रभु जातग है तू सोवन है ।

३

जो कल करना बह प्राज करो,
जो श्राज करना बह श्रच करलो ।
जब चिडियों ने चुग खेत लिया,
तन पछताये क्या होयत है ॥

महारानी सीता

बहुत पुराने समय की बात है, हमारे यहाँ मागध्वर्ष में एक बड़े राजा थे। उनका नाम जनक था वे मिथिला के राजा थे। उनके एक बड़ी सुन्दर मुशील लड़की थी। उसका नाम सीता था।

सीता जी का विवाह करने के लिए राजा जनक ने बहुत से राजकुमारों को बुलाया। उन्होंने कहा कि जो सुनकर हमारे इस विशाल काय भारी धनुष को उठा कर तान देगा, उसी के साथ सीता का विवाह होगा।

सब राजकुमारों ने कोशिश की, मगर धनुष किसी में उठा तक नहीं, अन्त में श्रयोया के राजकुमार श्री रामचन्द्र जी ने धनुष को झटपट उठा लिया और तान दिया। सीता जी का विवाह रामचन्द्र जी के साथ हो गया।

कुछ दिनों के बाद श्री रामचन्द्र जी को अपनी सीतेली माता कैकयी की आज्ञा से अपने छोटे भाई लक्ष्मण के साथ उन में जाना पड़ा। सीता जी भी उनके साथ हो गईं। जंगल में बहुत अधिक वृष्टि थी, परन्तु श्री रामचन्द्र जी के साथ बहुत सुशी थी।

एक दिन लंका का राजा रावण, श्री रामचन्द्र जी की गैरमौजूदगी में—अकेले में सीता जी को चुरा ले गया। सीता जी बहुत रोई, पर बड़ा कोई बुझाने वाला नहीं था। रावण ने सीता जी को लंका में दबिया दिया।

रामचन्द्र जी ने वानरवशी गौरा की मदद से सीता जी का पता लगा लिया। हनुमान जी लंका में गए और सीता जी का खबर ली। फिर वानरवशी युवकों की बड़ी गति फौज लंका में पहुँचे और रावण से लड़े।

बड़ी भयंकर लड़ाई हुई। अन्त में रावण मारा गया, सीता जी रामचन्द्र जी से फिर मिली।

अन रामचन्द्र जी का वन में रहने का समय पूरा हो गया था। इस लिए वे सन के साथ अयोध्या को लौट गए।

अयोध्या पहुँचने पर लोग ने रामचन्द्र जी को अपना राजा और सीता जी को अपनी महारानी बनाया।

इसी तरह बहुत दिना तक सीता जी रामचन्द्र जी के साथ सुख से रही और उनकी मेवा करती रहीं।

सीताजी अपने धर्म में कतनी मजबूत थी कि उन्होंने राजा रावण को राजा बनना मजूर नहीं किया अपने पति के साथ बना में कैसे कैसे भयकर कष्ट सहन किए।

वही कारण है कि लोग आज भी बड़े आदर से उनका नाम लेते हैं और उनका प्रशंसा करते हैं। आप सन भी बहुत मर्ती लड़कियाँ हैं इस लिए तुम्हें भी सीता जी के कदमों पर चलना चाहिए।

जैन धर्म में मोलट सती माना जाती है। माना जी

की गिनती भी उन सोलह सतियों में है। प्रातःकाल
हर एक स्त्री पुरुष को सोलह सतियों के नाम सुभक्त्य
करने चाहिए। इसके लिए यह स्लोक है —

श्रीमती चन्दन पालिका भगवती राजीभती द्रौपदी,
कौशल्या च भृगवती च सुलसा सीता सुभद्रा शिवा ।
कुन्ती शीलावती तलस्य दयिता चूडाप्रभावत्यपि,
श्यावत्यपि सुन्दरी दिनमुखे शुर्वन्तु नो मंगलम् ॥

अभ्यास

- १ सीता जी के पिता पृथ्वी के राजा थे ?
सीता जी का विवाह कैसे हुआ ?
- ३ रामचन्द्र जी की मदद किन लोगों ने की ?
- ४ हनुमान जी क्या चन्द्र थे ?
- ५ रामचन्द्र पृथ्वी से सीता जी कैसे लुन्नी ?
सीता जी के जीवन से क्या शिक्षा है मिलता ?

अच्छी सीख

अच्छी लड़कियों को बहुत सी अच्छी बातें सीख लेनी चाहिए । बड़ी होकर तुम्हें भोजन बनाने की जरूरत होगी, इसलिये यह काम तुम्हें अपनी माता और बड़ी बहन से छुटपन में ही सीख लेना चाहिए ।

जब कभी तुम्हारी माता कपड़े सीने धँडे तो तुम भी उनके पास बैठकर उनका सीना पिरौना ध्यान से देखो और उनकी मदद करो । इससे थोड़े ही दिनों में तुम्हें भी सीना या जायगा और तुम अच्छे अच्छे कपड़े सी सकोगी ।

अपने छोटे भाइयों और बहनों के साथ अच्छा बर्ताव करो । उनको कभी भी दुखी न रहने दो । उनको चिडाना और रुलाना ठीक नहीं है ।

अपने से बड़े माता, पिता भाई बहन बगैरह का आदर करो । प्रातः काल उठते ही माता पिता के चरणों में प्रणाम करना चाहिए । भाई और बहन आदि

स जयजिनन्ट करना चाहिए । मर्या उनका कहना माना
 दगे । इसमें तुम्हें कभी कोट रुष्ट न होगा और तुम
 मदा मुग्गी रहोगी ।

अगर तुम्हारा यहाँ कभी कोई बीमार पड़ जाय तो
 तुम्हें उसकी सेवा करना चाहिए । तुम्हें रोगी में धिनाना
 न चाहिये । उसको खाना, पीना, दवा वगैरह ठीक समय
 पर दो ।

तुम्हें सवस मीठा बोल बोलना चाहिये, इसमें सब
 लोग तुम्हारा आदर करेंगे । अपने मुँह में कभी कोई
 गाली या बुरा शब्द न निकालो ।

तुम्हें हमेशा अपने कपड़ साफ रखन चाहिये और
 बदन भी रख साफ रखना चाहिये । इसमें सब लोग
 तुम्हें प्यार करेंगे और तुम कभी नाराज न पड़ोगी ।

अभ्यास

- 1. प्रातः काल उठकर क्या करना चाहिए ?
- 2. घर में काढ़ नाराज हो तो क्या करना चाहिए ?
- 3. सब के साथ कैसे बोलना चाहिए ?
- 4. कपड़ साफ रखन में क्या लाभ है ?

गीर्वा

सागर से गहरापन सीखो,
लहरा में आगे बढ़ना ।
सहन शक्ति पृथ्वी में सीखो
और शूल से दृढ़ रहना ॥

अम्बर से विशालता सीखो,
सूरज से जग-मग करना ।
मेघ में लो दानशीलता,
तारा में मिल जुल रहा ॥

वृक्षा से उदात्ता भावो,
छाया से सेवा करना ।
फुल्लों में मोलापन सीखो,
और लताओं से झुकना ।

कलिया में मुस्काता सीखो,
और वायु से अठपेली ।
चिड़ियों में मृदु गाना सीखो,
कोपल में माटी ढोली ॥

पाँच इन्द्रियाँ

‘इन्द्रि’ जीव को कहते हैं। जिसके द्वारा इन्द्र को यानी जीव को ज्ञान होता है उसे इन्द्रिय कहते हैं। जीव आँसू के द्वारा देखता है और कान के द्वारा सुनता है, इसलिये आँसू और कान इन्द्रियाँ हैं। इस प्रकार कुल इन्द्रियाँ पाँच हैं—(१) स्पर्शन इन्द्रिय, (२) रसन इन्द्रिय, (३) घ्राण इन्द्रिय, (४) चक्षु इन्द्रिय, और (५) कर्ण इन्द्रिय। कर्ण इन्द्रिय को श्रोत्र इन्द्रिय भी कहते हैं।

यह इन्द्रियों का पाठ बहुत ध्यान में पढ़ना चाहिये। अगर तुम इसको अच्छी तरह समझ गई, तो आगे की कठिनाइयाँ बहुत सहल हो जायेंगी। इन्द्रिया की अच्छी तरह पहचान कराने के लिये प्रश्न और उत्तर के रूप में आगे वर्णन किया जाना वाला है। तुम प्रश्न और उत्तर पर बगबर ख्याल रखना। देखना, कहीं भूल न जाना।

(१) स्पर्शन इन्द्रिय

‘क्या तुमने कभी धरुँ खाइ है ?’

‘जी हाँ, कितनी ही नार ।’

‘केसी होती ह ? गर्म होती है न ?’

‘जी नहीं, ठण्डी होती हे ।’

‘अच्छा, आग केसी होती है ।’

‘आग गर्म होती ह ।’

‘लोहा और रड केसी ह ?’

‘लोहा भारी और रड हल्की होती है ?’

‘कभी ईंट और शीशे पर हाथ फेरा ह, कैसे होते हैं ?’

‘ईंट खुदरो और शीशा चिकना होता ह ।’

‘क्या तुम कभी गदले पर मोड़ हो ?’

‘जी हाँ कितनी ही नार । गदला बडा नरम होता है ।’

‘अच्छा, यह पत्थर केसा होता है ?’

‘अनी पत्थर तो बहुत कडा होता है ।’

‘तुम बहुत समझदार हो । अच्छा, एक घात और घनायो । नर्क को ठडा, आग को गर्म, लोहे को भारी, रड को हल्की, ईंट को खुदरो, शीशे को चिकना, गदले को नर्म और पत्थर को कडा तुमने कैसे जाना ? किम चीज मे जाना ?’

‘हाथ पाँव और शरीर मे छुकर ।’

'बहुत ठीक । आज मैं बाद) गया, जिसके किमी चीज को ड्रूक ठडा, गर्म हल्का, भारी जाता जाता है उमे स्पर्शन इन्द्रिय कहते हैं । स्पर्श श्रव शरीर है ।'

(२) गन्त इन्द्रिय

'क्या तुमने अभी पटा खाया है ?'

'जी हाँ, कितनी ही बार ।'

'पना सकती हो, क्या स्वाद होता है ?'

'बहुत मीठा ।'

'थच्छा, नीरू कैसा होता है ?'

'नीरू पटा होता है ।'

'नीम और मिर्च का क्या पतायो ?'

'नीम मरुया और मिर्च चम्परी होती है ।'

'और आंवला ?'

आंवला पता तो है, पान का भी पता है

उसका नाम भी पता है ।

न मधुआ और न चमपा ही होता है । उमफा खाए कुद
और ही तगद का है ।'

'तुम ठीक रहती हो । आँखों का खाए कुद अलग
हा तगद का होता है । उमफा नाम शाखा में रपाय है ।
आजकल रपाय को कर्मला कहन हँ ।'

'अच्छा, अब यह बताओ, तुमने पेडा, तीम, मिर्च
और आँखों का स्वाद कैसे जाना ? किम चीन से जाना ?'

'जीभ में चम कर जाना ।'

'अब, याद रखो कि, जिमके द्वारा जिमी चीन में
चम कर उसका गवडा मीठा आदि खाए जाना जाय,
उमें मन इन्द्रिय रहन हँ । मन का अर्थ जीभ न ।'

(३) घ्राण इन्द्रिय

'क्या अभी तुमने गुलाब या चमेली आदि का कोट
फल देखा और सूघा है ? यदि सूघा ह तो उता मकली
हो, कैसा होता हँ ?'

'क्या नहीं उता मकली ? गुलाब और चमेली का

फूल खुशबूदार होता है। उमम में बहुत भीनी भीनी सुगन्ध आती है।'

“अर कभी तुमने मिट्टी का तेल भी देखा है ?”
‘अबो, मिट्टी के तेल में तो बहुत बन्बू आती है।’

‘अच्छा, घताओ—तुमने गुलाब की सुशबू और मिट्टी के तेल की बन्बू को कैसे जाना ? किस चीज से जाना ?

‘नाक में सूँघ कर जाना।

‘ठीक कहा। ध्यान में याद रखना कि जिसके द्वारा किसी चीज को सूँघ कर उसकी सुशबू या घदबू को जाना जाय, उस प्राण इन्द्रिय कहते हैं। प्राण का अर्थ नाक है।’

(४) चक्षु इन्द्रिय

‘कोयला या काजल का रंग क्या होता है ?’

‘कोयला और काजल का रंग काला होता है।’

‘मोना और चांदी का रंग कैसा होता है ?’

‘मोना पीला और चांदी सफेद होती है।’

'रून का रंग कैसा होता है ?'

'खून का रंग लाल होता है ।'

'और कबूतर की गर्दन का रंग ?'

'कबूतर की गर्दन का रंग नीला होता है ।'

'कच्चे आम का रंग क्या सकती हो ?'

'जी हाँ, कच्चे आम का रंग हरा होता है ।'

'अच्छा पताश्रो, तुमने यह कैसे किम चीज से जाना कि काजल काला, सोना पीला, चाँदी सफ़ेद, खून लाल, कबूतर की गर्दन नीली और कच्चा आम हरा होता है ।

'आँस से देख कर जाना ।'

'अच्छा घेटी ! याद रखो कि जिसके द्वारा किमी चीज को देखकर उसके रूप को यानी रंग को जाना जाय, उसे चक्षु इन्द्रिय कहते हैं । चक्षु का अर्थ आँस है ।'

(५) कर्ण इन्द्रिय

'घोडा कैसे बोलता है ?'

'घोडा हिनहिनाता है ।'

‘गधा कैसे बोलता है ?

‘गधा रँकता है ।’

‘कुत्ता कैसे बोलता है ?’

‘कुत्ता भौंकता है ।’

‘अच्छा यह बताओ, घोड़े का हिनहिनाना, गधे का रँकना, कुत्ते का भौंकना कैसे जाना ? किस चीज से जाना ?

“कान से सुन कर जाना ।”

वस, आज से याद रखना कि तिमके द्वारा आवाज सुनाइ रे, किसी भी तरह का शब्द सुनाइ रे, उम कर्ण इन्द्रिय कहते है । कर्ण का अर्थ कान है । कान को श्रोत्र भी कहत है । इसलिये कान को श्रोत्र इन्द्रिय भी कहा जाता है ।’

अभ्यास

- १ 'श्रुति' किसे कहते हैं ?
- २ इन्द्रिय किसे कहते हैं ?
- ३ इन्द्रियों की कितनी हैं ? उनका नाम बताओ ।
- ४ स्पर्शन इन्द्रिय किसे कहते हैं ?
- ५ रस इन्द्रिय से क्या जाना जाता है ?
- ६ चक्षु इन्द्रिय किसे कहते हैं ?
- ७ आवाज किस इन्द्रिय से जानी जाती है ?
- ८ घ्राण किसे कहते हैं ? इससे क्या जाना जाता है ?
- ९ दृग् इन्द्रिय का दूसरा नाम क्या है ?
- १० बहरे की कितनी इन्द्रियाँ हैं ?
- ११ क्या आँसु चार इन्द्रियों वाला है ?

नोट—अंधा, बहरा, मूंगा आदमी भी पंचेन्द्रिय ही माना जाता है। इन्द्रियाँ तो हैं, पर उनका शक्ति बन्द हो गई है।

हमारा भारत

यह भाग्य वर्ष हमारा है,
हमको प्राणां मे प्यारा है !

है यहाँ हिमालय खड़ा हुआ,
मन्तरी सतीया खड़ा हुआ !

गंगा की निर्मल धारा है
यह भाग्य वर्ष हमारा है ॥

क्या ही पहाड़ियाँ हैं न्यारी,
चिनम सुन्दर भरा जारी !

शोभा में सब म न्यारा है,
यह भारत वर्ष हमारा है ॥

है टया मनोहर डोल रही,
वन में कोयल है पील रही !

बहती सुगन्ध की धारा है,
यह भाग्य वर्ष हमारा है ॥

तन मन धन प्राण चढाएँगी,
हम इसका मान चढाएँगी !

नग न सौभाग्य मिनारा है,
यह भारत वर्ष हमारा है ॥

बड़ों का आदर

माता, पिता, चाचा, चाची, ताऊ, और ताई आदि सब तुम से बड़ हैं, उनका आदर और सत्कार करना तुम्हारा कर्तव्य है। जो लड़कियाँ अपने बड़ा का आदर करती हैं, वे ससुरार में सब और में प्रशंसा पाती हैं और खुद बड़ी होने पर आदर की दृष्टि से देखी जाती हैं।

जब कभी तुम से कोई बड़ा आकर मिल, तो झुककर खड़ी हो जाओ, हाथ जोड़ कर प्रणाम करो, और आदर के साथ 'जय विनेन्द्र' कहो। उनको बैठने के लिए आसन दो पीने के लिए जल आदि की पछो।

वे जब कोई बात पूछें, बड़े ध्यान से सुन कर नम्रता पूर्वक उत्तर दो। उत्तर साफ हो, सच्चा हो। बड़ों में कपट रखना, ठीक नहीं होता।

बड़ों के सामने मुँह करके खींकना ठीक नहीं होता। धीरे धीरे तो दूरी और मुँह करके खींको। खींकते समय मुँह पर रुमाल या हाथ लगा लेना चाहिए।

जब बड़े खड़े होकर जाने लग तो उनके खड़े होते ही तुम भी खड़ी हो जाओ, कुछ दूर पहुँचने के लिए माथ

जायो, और फिर जयजिओट कंगे के साथ प्रणाम करके लौटो ।

बड़े लोगा मे प्रश्न करत समय मत हँसो । और प्रश्न करने मे अपना अहकार भी न दिग्गलाओ । जो कुछ पूछना हो, विनय के साथ पूछो । बड जर उत्तर दे, तो समझने क लिए हो इधर उधर का दलीलें मत रगो । व्यर्थ विबाद चढा कर अपनी हेकड़ी दिगाना, ठीक नहीं है । यदि बडो के उत्तर मे कुछ भूल हो, तो हसो मत । बडा के सामने हमना, उन की भूल का मजाक रगना, बड़ी खराब आदत है । भगवान महावीर रसे बहुत बडा पाप बनलात है । उाका कहना है कि विनयवान आदमी किसी भी धर्म का पालन नहीं कर सकता ।

अस्तु, बडा की पीछे कभी पुराड मत करो । अपने माता, पिता, भाभी, भाई आदि की दूसरा के सामने निन्दा करना बडा भयकर पाप है । बडो की निन्दा करने से उनकी निन्दा नहींहोता, परन तुम्हारी ही निन्दा होती है । जब तुम दूसरा के सामने अपने पर की निन्दा कंगे और

उभा नट सुन पाएँ, तो उनको कितना दुःख होगा ।
प्रमत्ता गभाग बनने की कोशिश करो ।

पाठशाला में जितनी अध्यापिकाएँ हैं, चाहे वे तुम
से नीचे दर्ज की पढाती हैं, चाहे ऊँचे दर्ज की, जब वे तुम
से मिलें तो सन से हाथ जोड़कर जयजिनन्द्र, करो । और
जब वे भिदा हो, या तुम उनके पास से जाना चाहें,
तब भी जयजिनन्द्र करो । इसी प्रकार जो कन्याएँ तुमसे
पढी हो, ऊँचे दर्ज में पढती हैं तो उनको भी जय
जिनन्द्र कहकर आदर देना चाहिए ।

ग्रन्थाम

- १—बडा के आते पर क्या करना चाहिए ?
- २—बडा से कैसे बोली ?
- ३—बडा के आग में छाकी ?
- ४—बडा को विगत कैसे दा ?
- ५—अध्यापिकाया में कैसे बतता ?

दया

जानवर है आदमी,
 जो बुद्धि में बढकर न हो ।
 बुद्धि भी क्या बुद्धि है,
 जो धर्म में तपर न हो ॥
 धर्म भी क्या धर्म है,
 जिसमें नहीं है सत्य कुछ ।
 सत्य वह किस काम का,
 उपकार जो तिल भर न हो ॥
 कर सके उपकार कवल,
 है वही बम आदमी ।
 यां तो कहन के लिए हो,
 आदमी, बन्दर न हो ॥
 बुद्धि में, बल में, विभव में
 लाय बढ कर हो मनुष्य ।
 जानवर समझो, दया का
 जो असा तिल पर न हो ॥



राजा मेघरथ

उद्युत पुराने जमाने की बात है मेघरथ नाम के
रु नई ही न्यालु गजा थे । किसी भी दुखी को देख
र उनका कोमल हृदय दया में भर जाता था । वे
खो की सेवा करने में किसी प्रकार की कमी नहीं
खते थे । यहा तक कि मेवा और दया के मार्ग में
। अपना सब कुछ निह्यावर करने को तैयार हो जाते थे ।

अच्छे लोगों का यश इस लोक में ही नहीं रहता,
है दूसरे लोकों में भी जा पहुँचता है । राजा का यश
भी स्वर्ग लोक तक पहुँच गया । एक समय की बात
है कि स्वर्ग के राजा इन्द्र ने अपनी देव-सभा में मेघरथ के
दया भाव की बड़ी भारी प्रशंसा की । सब देवताओं ने
सुनकर प्रसन्नता प्रकट की । परन्तु दो देवता कुछ नाराज
हुए, उन्होंने परीक्षा भी ठानी ।

एक क्यूतर बना, दूसरा बहेलिया । क्यूतर उड़ता
हुआ राजा के पास पहुँचा । वह भय के मारे थर-थर
कांप रहा था । राजा ने बड़े प्रेमपूर्ण दया भाव से

कनूत की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा भाई, डरता क्या है ? शान्त रहो । अब तुम्हें कोड़ मार नहीं संकेगा ।

इतने में पीछे पीछे वहेलिया भी आ पहुँचा । वह बोला महाराज यह मेरा कनूत है । मैंने ग्याने के लिए इसे पकड़ा था । नेमो यह मेरा बाज भी भूखा है । मेरा कनूत मुझे मिलना चाहिए ।'

राजा ने कहा भाई' अब तो यह मेरी शरण में आ गया है । मैं तुम्हें मांस के लिए, भला कैसे दे सकता हूँ ? हाँ, इमरु बदल में, जा कहा दिला दूँ । यनाओ, क्या चाहिए ?'

वहेलिया ने कहा—'महाराज, यह अन्याय है । मेरी चीज मुझे लौटा दीजिये । अगर नही लौटा सकते, तो किसी अन्य जीविन प्राणी का कनूत जितना मांस दिला दे । मुझे ताजा मांस चाहिए नहीं नही ।'

राजा ने कहा—'यह कैसे हो सकता है । कि कनूत को नयाऊ और दूसरे किसी पंचेन्द्रिय जीव को मारूँ ?'

श्रीर को चाहो, ले लो, मास नहा दे सकता । जानते हो
कैसी जीव को मारना और मास खाना, कितना पुरा है ?
अगर मास ही लेना है, तो मैं अपनी गेहूँ का मास दे
सकता हूँ ।'

गहेलिये ने कहा--'महाराज, यह क्या करते हो ?
कानून के लिए अपना मास देना चाहते हो ?
अगर विचार कर काम कीजिए ।'

राजा को मंत्रियों ने और प्रजा के लोग ने भी बहुत
सल्लाह दी । परन्तु वह दयावीर बन मानने वाला था ?
गहेलिया मास की बड़ लगाए रहा, और राजा ने किसी
दूसरे जीव का मास न देना चाहा । कानून की रक्षा के
लिए राजा अपने प्राणों पर खेलने लगा ।

राजा ने झटपट तराजू मंगा ली । तराजू के एक
पलड़े में कानून को बिठाया और दूसरे पलड़े में अपना
मास काट काट कर रखने लगा । पलड़ा मास से भर गया
परन्तु कानून के बराबर, न हुआ । देवता की माया जो
ठहरी । राजा मेरुध भी पीछे हटने वाले वीर नहीं ।

उडे आनन्द क माथ हमत हुए तराजू के पलडे मे बैठ गए, और कहा--'लो भई, अब तौ कबूतर के धरानर हुआ ।'

राजा का तराजू में बैठना था कि आकाश में देव दुन्दुभि बज उठी । फला की वर्षा होने लगी । जय जय की ध्वनि में वायु मण्डल पूर-दर तक गूजता चला गया । दीना त्वताया ने प्रसन्न भाव से राजा के चरणों में झुक कर रन्दना की और क्षमा माँगी । राजा का शरीर क्षण भर में फिर पहल में स्वस्थ हो गया ।

पुत्रियों, जैन इतिहास में राजा मेघरथ का बहुत गुण मान किया गया है । त्या धर्म के लिए राजा मेघरथ का उदाहरण अलौकिक है । 'तुम जानती हो, भगवान् शान्तिनाथ कौनसे तीर्थकर थे ? राजा मेघरथ का दयालु आमा ही आगे चलकर जैन धर्म के १६ सोलहवें तीर्थकर श्री शान्तिनाथ जी के रूप में अवतारित हुआ ।

भगवान् शान्तिनाथ जी भी दया के जीते जागते अवतार थे । आपके जन्म के प्रभाव से ही देश में फैल

रक्षा भगा का रोग दूर हो गया, और चारों तरफ सुख शान्ति का साम्राज्य छा गया । दया का फल कितना सुन्दर है ? दया के प्रभाव से तीर्थंकर जैसा महान पद मिलता है, जिनके परगण में स्वर्ग के इन्द्र भी मस्तक झुकाते हैं ।

अभ्यास

- १—राजा मेघरथ कैसा राजा था ?
- २—उसके पास दो देवता क्यों आये ?
- ३—राजा और पहेलिया में क्या बातें हुई ?
- ४—मेघरथ कौन से तीर्थंकर हुए ?
- ५—इससे तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?

गुरु उन्दन मूत्र

तिस्समुत्तो आयाहिण,

पयाहिण कोमि ।

उत्तामि, नममामि,

मक्कागमि, सम्माणेमि ।

कल्लाण भगल,

देवय, चेइय ।

पञ्जुवासामि,

मत्थण्ण उदामि ।

यह पाठ गुरुत्व को उन्दना करने के समय बोला जाता है । जैन माधु और जैन साध्वी, जैन धर्म में गुरु माने गए हैं । जैन धर्म में ग्याला कठी शोध कर भेंट पूजा चढ़ाना लने मान को गुरु कहा मानत ।

जैन धर्म में गुरु वही माना जाता है जो किसी प्रकार का लोभ लालच न कर, रुपया पैसा धन कुछ भी न रखे तागा मोहर गेल प्रादि किसी भी सवारी पर न बैठे,

नहीं जाना हो नगे पैरों पत्ते, रुखा पाती पीर, अंग
 का स्पर्श न कर, किमी भी नर्शली भग आदि चीज का
 सेवन न कर, हरी साग मन्नी न ग्याय, न कभी भूठ षोले
 न कभी चोरी कर, माधू किमी आँगन हो न छूये, माश्वी
 किमी मई को न छूवे, न रात म भोजन कर आँग न गत
 मे पानी पीये । तुम दस्य मकी हो, कितना रुडा त्याग
 है ? जैन साधु घन चाना, कुड आसान खेल नहीं है ।

समार मे सचे गुरु का दर्जा बहुत ऊँचा माना
 गया है । समार की भक्त्या मे फस हुण अनार्ना जीमों
 को र्म का मरुचा उपदेश, गुरु से ही मिलता है । गु-
 टेव हमारे मन मे से आगान का अन्यकार दूर कर ज्ये
 ज्ञान का प्रभाश कर तेते है । एमे गुम्देव के ज्ये मे
 वन्दना करना, नमस्कार करना, तुम्हाग मर मे ज्ये
 फर्न है । गुरुदेव को सचे प्रेम के साथ ज्ये ज्ये मे
 आत्मा को बहुत बडी शान्ति प्राप्त तेते है ।

जैन स्थानक मे जैन गुम्देव के ज्ये ज्ये मे
 लिंग जाथो तो कुड दूर पर ज्ये ज्ये मे

जोड़ कर यह तिस्रुती का पाठ पढ़ी और चम आखिरी टुकड़ा 'मत्स्याण्य वन्दामि' आवे, तब जमीन पर घुटने टेक कर, मिर मुका कर नमस्कार करो। यह तिस्रुती का पाठ तीन बार पढ़ा जाना है, और तीना ही बार घुटने टेक कर नमस्कार किया जाता है।

अगर ऊर्धा घुटने टेक कर वन्दना करने की हालत में न हो, तो खड़े खड़े ही तीन बार तिस्रुती का पाठ पढ़ कर, मिर मुका कर वन्दना कर ली जाय।

अगर कभी गुरुदेव रास्त में आहार पानी लाते हुए या विहार करते हुए मिले तो वहाँ 'मत्स्याण्य वन्दामि' वम इतना कहकर ही वन्दना करना ठीक है।

वन्दना करते समय तुम माध्मी जी के चरणों को छू सकती हो, माधुश्री के चरणों को नहीं। और मर्द, माधुजी के चरणों को छू सकते हैं, माध्मी जी के चरणों को नहीं।

१—चैन में मैं गुरु किस कहते हैं ?

२—वन्दना कैसे करनी चाहिए ?

३—वन्दना करते समय तिस्रुती कितनी बार पढ़ना ?

४—रास्त में वन्दना कितने पाठ से करना ?

५—मौन किमप्य चरण छू सकता है ?

बोलो

जब बोलो तब सच-सच बोलो,
कभी न जानें ग्य ग्य बोलो
जब बोलो तब हँस कर बोलो ।
बाना मे मिसरी सी बोलो ।
जब बोलो तब झुक कर बोलो ।
सोच समझ कर रुक कर बोलो ,
जब बोलो तब खुता कर बोलो ,
अपने मन की जानें बोलो ।
जब बोलो तब हित कर बोलो ,
मन मे आदर भर कर बोलो ।
जब बोलो तब कम ही बोलो ,
जिन अवसर मत मु हको बोलो ।
जब बोलो तब मीठा बोलो ,
कभी न कुछ भी कहूँया बोलो ।
कभी किसी का भेद न खोलो,
घर की बात न बाहर बोलो ।
दोष, कपट रख कभी न बोलो ,
निन्दा, चुगली का मल बोलो ।

जैनधर्म दयाधर्म

हम कोड टुग द, हम कोर मार, हमे कोर्ड माली दे
तो हम केमा लगता है ? सुग लगता है या अच्चा लगता
है ? बुरा लगता है न ?

अब विचार कीजिए । अगर हम किसी जीव को
टुग दें, किसी जीव को मारे, मत्तों या माली दें, तो
उमे कसा लगेगा ? सुग लगेगा या अच्चा लगेगा ?
बुरा लगेगा ?

हाँ तो जो बात हम पसन्द नही है, हमे खरान
लगती है, वह दूसरे को किस तरह पसन्द आ सकती है ।
किसी तरह अच्छी लग सकती है ।

भगवान महाश्वर न इसीलिए तो कहा है — 'कि जो
बात तुम अपने लिए पसन्द नहीं करत, वह दूसरे के लिए
भी मत करो । ममार के मन जीव अपने लिए सुग
चाहत है, टुग कोड मा नहीं रहाता । मन का अपने
समान हा समझो ।'

अच्छा तो भगवान महावीर के उपदेश का क्या मार निकला ? भगवान महावीर के उपदेश का यह साग है कि, हम न किसी को मारे, न सताए न दुख दे, न गाली दें, न किसी प्रकार का बुरा भाव रखें। हम सब जीवों से प्रेम भाव रखें। जहाँ तक हम में बन सके, दूसरे जीवों को सुख शान्ति पहुँचाएँ। यही अहिंसा है, यही दया है। एक प्रकार से जैन धर्म का गण दया ही है। तभी तो जैन धर्म का दूसरा नाम दया धर्म है।

भगवान महावीर के ज्ञान में दयाधर्म की बहुत बड़ी महिमा है। भगवान महावीर को भगवान का पद भी, उनकी अपार त्याग के कारण ही मिला था। भगवान महावीर ने खुद भयकर कष्ट उठाकर ममार के सब जीवों को सुख शान्ति का मार्ग बतलाया। दूसरे के दुख-को दूर करने के लिए अपने सुख को भी छोड़ने के लिए तैयार हो जाना, इसी का नाम सच्ची दया है।

दया, धर्म का मूल है। मूल, जड़ को कहते हैं।

अगर वृक्ष की जड़ सूख जाय तो वह फिर हराभरा नहीं रह सकता, उसी समय मूस जाता है। इसी प्रकार दया का नाश होत ही धर्म का वृक्ष भी हराभरा नहीं रह सकता, उसी समय सूख जाता है। जो साधक सच्चा दयालु होगा, उसमें दूसरे सदगुण अपने आप आजायेंगे। दया के होन पर ही आदमी मर जीत सकता है, ईमानदार रह सकता है, श्रद्धा चाल चलन बन सकता है, सतोषी रह सकता है, और उदार दान देने वाला हो सकता है।

दया, बड़ा से बड़ा धर्म है। त्याग के बराबर दूसरा कोई भी धर्म नहीं है। जैन धर्म में तो मर जीवा पर दया भाव रखना, एक मुख्य धर्म माना ही गया है, पर इसे दूसरे धर्म वाले भी मानते हैं परन्तु विचार और आचार में जैना की दया, सभी दुनिया में श्रेष्ठ मानी गई है। इसलिए हम सब को अधिक से अधिक दयालु होना चाहिए। हम सब जीवा को प्रेम की आँखा से ही देखें किमो प्रकार का भी पैर निगेध और द्वेष न रखें।

४

‘अमर’ जगत-म मनुज का,
जीवन है अनमोल ।
दया-भाव रखना सदा,
मन की घुड़ी खोल ॥

२

‘अमर’ दयामय धर्म की,
रात दिवस जय बोल ।
बिना दया का धर्म मी,
धर्म नहीं, है पोल ॥

१

अभ्यास

- १—हम फोड़ दुःख देता है तो कैसे लगता है ?
- २—भगवान महावीर का क्या उपदेश है ?
- ३—धर्म का मूल क्या है ?
- ४—जैन धर्म का दूसरा नाम क्या है ?

—

मभ्यता

(१)

बडा को सटा आप कह कर बोली, तुम या तू मत कहो । तू कहना तो बहुत ही भटा है । 'आप' बडा क लिए आदर भाव का सूचक है ।

(२)

जब किसी स बोलना हो तो बड आदर के साथ पिताजी, चाचा जी, भाई जी, तथा अम्मा जी, ताई जी, नहन जी, आदि यथा योग्य विशेषण लगाकर बोलना चाहिए ।

(३)

अपने सै बडो क साथ चलना हो तो उनसे एक दो कदम पीछे रहो । वे पीछे हो तो मार्ग देकर उनको आगे हो जाने दो । दरवाज के आदर जाना हो तो पहले उनको जाने दो । दरवाजा बंद हो तो आगे बढ़कर उसे खोलदो ।

(४)

अपने मे बड या अतिथि-महमान के आन पर

उनका स्वागत गड्डे होकर करना चाहिए। और जब वे जान लेंगे तब भी गड्डे हो जाना चाहिए। और हो सके तो दरवान तक या गाड़ो तक उनके साथ निदा करने के लिए जाना चाहिए।

(५)

लिखते समय उँगलियों में स्याही मत लगान दो। यदि भूल में लग जाय तो तुरन्त रगड़ कर साफ कर डालो। स्याही से भर हुए काले और लाल हाथ ठीक नहा होत।

(६)

कलम से जमान पर स्याही न छिड़को। और न उमड़ो सिर के बालों से पोछो। जमीन पर स्याही डालने में फर्श गदा होता है, और बालों में पोछने पर सिर गदा होता है।

(७)

हर जगह धूँकने की आदत बुरी है। इससे बीमारी फैलती है। हर जगह नाक भी नहीं सिनकना चाहिए।

इमकें लिए रुमाल रम्यो ।

(८)

लिफाफा धूरु लगा कर नहा बद रुग्ना चाहिए । और
न पुस्तक के पन्न धूरु लगाकर उलटने चाहिए । रुपई
न पुस्तक के पन्न धूरु लगा कर कभी मत चथाओ ।

(९)

किसी को कोई चीज देनी हो तो धायें हाथ स मत
दो । और लेनी हो तो धायें हाथ से मत लो । देने लेने
मे दाहिने हाथ का व्यवहार करना ही ठीक है । धायें
हाथ से लेना अनादर का सूचक है ।

(१०)

सम्य समान मे डकार लना, जीभ निकालना, नाथ
मे उँगली डालना, उँगली चटकाना, जम्हाई लेना,
आपसमे कानाफूसी करना, थँगडाई लेना, जोर से
हँसना, जोर से शीलना-इत्यादि जुग समझा जाना है

(११)

तुम भी किसी अपने से बड़े या छोटे से मिलो तो
 उसके साथ हाथ जोड़ कर जय जिनेन्द्र करो । और
 वेदा हो तुम भी जय जिनेन्द्र करके विदा होना
 । या दूसरे को विदा देना चाहिए ।

मंगल पाठ

(१)

अरिहन्त जय जय,
 सिद्ध प्रभु जय जय ।
 साधु जन जय जय,
 जिन धर्म जय जय ॥

(२)

अरिहन्त	मंगल,
सिद्ध प्रभु	मंगल ।
साधु जन	मंगल ।
जिन धर्म	मंगल ॥

(३)

अरिहन्त उत्तम
 सिद्ध प्रभु उत्तम
 साधु जन उत्तम,
 जिन धर्म उत्तम ॥

(४)

अरिहन्त शरण,
 सिद्ध प्रभु शरण
 साधु जन शरण,
 जिन धर्म शरण ॥

(५)

चार शरण अध हरण जगत में,
 और न शरणा दितकारी
 जो जन अहरण करे वे होते,
 अजर अमर पद के धारी ॥

टिप—यद् मंगल पाठ सुषह पालथी आमन से
 बैठ कर, पूर्व की ओर मुँह कर, दोनों हाथ जोड़ कर
 पढ़ना चाहिए ।

रात्रि भोजन

भारवाड में एक श्रादमी था। वह रात में भोजन किया करता था। उसे मिलने वाले जैन लोगों ने बहुत ममकाया कि "रात में मत खाया करो, खाने के लिए दिन के धारह घंटे क्या कुछ कम हैं? दिन को छोड़ कर रात में खाना, श्रमों का खाना है।"

वह श्रादमी बड़ा जिद्दी था। नहीं माना। "मैं जैन धर्म को चात क्यों मानूँ?"—यह भी उसके मन में घमंड था, वह रात में ही रसोई बनवाता रहा और खाना रहा,

एक बार उसने अपने नौकर से रात में रसोई वावाई। रसोई में पूरी ममूची मिडी की तरकारी चूँकी गई थी।

अचानक एक छिपकली ऊपर से या कहीं आसपास स आकर तरकारी में गिर गई। रात के अंधेरे में वह दिखाई नहीं दी। मिडी के साथ ही वह भी पका दी गई।

वह श्रादमी जब भोजन करने बैठा तो पहले ही कीर में छिपकली था गई। वह रसोई करनेवाले नौकर पर गुस्मा होकर बोला। "क्यों रे नालायक, इस मिडी का डठल

भी नहीं तोडा ।” नौकर घबरा कर बोला “हुजूर, मैंने तो सभी मिंडियो के डठल तोड़े हैं, यह एक कैसे रह गई ।”

अब तो भोगन करने वाले ने ज्या ही उसे तोड़ने के लिए रोटी का टुकड़ा, उस पर रगड़ा तो चार पैर दिखाई दिए । वह चिल्ला उठा—“अरे यह क्या है ।”

अबेरा था । अच्छी तरह साफ नहीं दिखाई दे रहा था । नौकर से झटपट लालटेन ले आने को कहा ।

नौकर जल्दी में लालटेन ले आया । लालटेन के उजाले में देखा तो एक दम हक्का बक्का रह गया । उसके मुँह से अगनक चीख निकली—“अरे यह तो छिपकली है । बहुत बचा, नहीं तो आज मर गया होता ।”

उस दिन से उसने रात में खाना छोड़ दिया । वह कहने लगा—“रात का खाना बहुत बुरा है । अथ मूल करके भी कभी रात में नहीं खाऊंगा ।”

रात का खाना बहुत खराब है । जैन धर्म में इसे

त बुझा फाया गया है। रात में ऊँची ऊँची
 त है। इस और तोता कमी भी रात से ऊँची ऊँची।
 शब्दों और जो है वे रात के सन्ने में शब्दों को
 । रात का सन्ने, शब्द है। मन्ने मन्ने, ऊँची
 दि अनेक सन्ने जंत खाने में पढ इन्ने, ऊँची
 मा है।

आज के मन्ने में महात्मा गाँधी जी का शब्द शब्द
 शासक हैं। नेमिए, वे भी रात में शब्द शब्द शब्द
 गि भोजन को गाँधी जी बहुत बुझा मन्ने हैं। शब्द शब्द
 यह निरम धर्म और स्वाम्य शब्दों हैं इन्ने शब्द
 जाने योग्य है।

अभ्यास

- १—यह घटना कहाँ और कैसे बना ?
- २—जैनधर्म में रात्रि भोजन को कैसा बुझा मन्ने है ?
- ३—गान में कौन पढ़ी खाते हैं ? कौन शब्द ?
- ४—गांधी जी रात्रि भोजन करते हैं या नहीं ?

नल दमयन्ती

आज कल की नहीं, हजारों वर्ष पहले की बात कि भारतवर्ष की अयोध्या नगरी में, नल नाम के एक बहुत बलवान, गुणी और विद्वान राजा थे। राजा नल अपनी प्रजा से बड़ा प्रेम करते थे, अतएव उनका यश दूर दूर तक फैला हुआ था।

विदर्भ देश के राजा भीम की पुत्री दमयन्ती भी उस युग में बहुत सुन्दर और सुशील लड़की थी। उसकी प्रशंसा भी दूर दूर तक फैली हुई थी। राजा नल ने दमयन्ती के और दमयन्ती ने राजा नल के रूप और गुण की बहुत प्रशंसा सुनी। दोनों एक दूसरे को चाहने लगे। सौभाग्य से जब दमयन्ती का स्वयंवर हुआ तो दमयन्ती ने अन्य सब राजार्यों को छोड़ कर नल को ही वरमाला पहनाई। बड़े आनन्द के साथ दोनों का विवाह हो गया।

राजा नल में और तो सारे गुण बहुत अच्छे थे, परन्तु जुआ खेलने की बहुत बुरी टेव थी। राजा नल

चन्द्रमा थे, तो यह दुर्गुण उनमें कलक था। नल का लोग भाड़ कूबर पड़ा ही दभी और ईर्ष्यालु प्रकृति का बर्त था। एक बार राजा नल ने कूबर के साथ जुआ खेला, राज पाट सब हार गए। आखिर शर्त के अनुसार नल को वनवास स्वीकार करना पड़ा।

दमयन्ती ने कहा कि मैं भी आपके साथ चलूंगी। नल ने बहुत समझाया कि 'वन में बड़े कष्ट हैं, इसलिए तुम अपने पिता के यहा चली जाओ।' परन्तु दमयन्ती ने कहा—'जब पति पर सकट आया हो, तब स्त्री को उसका साथ देना चाहिए। वह स्त्री ही क्या, जो सकट में पति का साथ छोड़ दे।' आखिर दोनों वन में जाकर रहने लगे।

एक दिन राजा नल दमयन्ती को सोती द्रोह कर कहा चल दिए। उन्होंने सोचा कि 'जब वह मुझे न पावेगी तो अपने आप पिता के यहा चली जायगी ध्यर्थ ही मेरे कारण वन में दुःख पा रही है।

राजा नल के चले जाने पर दमयन्ती की नींद खुली

वह जगल में अकेली नल को ग्योजती फिरी और तरह तरह के कष्ट उठाती रही । वह पड़ी माइस वाली स्त्री थी । वन में भयकर सिंह, सर्प आदि से भी नहीं डरती थी । आखिर जब भीम को मालूम हुआ तो उसने दमयन्ती को बड़े प्रेम से अपने पास बुला लिया ।

उधर राजा नल दधिपर्ण राजा के यहा गुप्तरूप से मारथी बन कर रहने लगा । उस युग में नल के समान दूसरा कोई घोड़ों को तेज चलाने में निपुण नहीं था । नल को प्रगट करने के लिए दमयन्ती का फिर से जाली स्वयंवर रचा गया । समय जान पूरु कर इतना योडा रक्खा गया कि नल के समान चतुर सारथी ही बहा इतनी जल्दी पहुँच सकता था । आखिर राजा नल दमयन्ती के लिए प्रगट होगए । अयोध्या में आकर राज्य करने लगे । उत्तर अरस्था में नल और दमयन्ती ने जैन धर्म की मुनि दीक्षा ग्रहण की । धर्म साधना के बाद सद्गति प्राप्त की । जैन धर्म की १६ सतियों में दमयन्ती का भी प्रमुख स्थान है ।

अभ्यास

- १—दमयन्ती की कहानी बताओ ।
 २—नल में क्या दृग्गण था ? ३—जाली

